PEER-REVIEWED REFEREED JOURNAL
ISSN 2231-0479-SAMAGAM
RNI MPHIN/2000/02531
Po.Reg. MP/BPL/4-188/2019-21

सितम्बर-2022। मूल्य पचास रुपये। 15 तारीख को प्रकाशित। पृष्ठ संख्या 48

समागम

शोध एवं संदर्भ की अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

राहुल बारपुते

हिन्दी पत्रकारिता के 'बाबा'

मनोज कुमार
सम्पादक
प्रो. (डॉ.) विशाला शर्मा
सहयोगी सम्पादक

विषय-विशेषज्ञ

प्रोफेसर के.जी. सुरेश
कुलपति
माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल

गिरिजाशंकर
वरिष्ठ पत्रकार एवं राजनीतिक विश्लेषक, भोपाल

प्रो. (डॉ.) सुधीर गव्हाणे
पूर्व कुलपति, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय तथा
एमजीएम विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र

जगदीश उपासने
अध्यक्ष, प्रसार भारती भर्ती बोर्ड, भारत सरकार

प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी
महानिदेशक, भारतीय जनसंचार संस्थान, दिल्ली

प्रो. (डॉ.) च्यांग चिंग खुई
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, बीजिंग विश्वविद्यालय, चीन

विवेक मणि त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर (भारत अध्ययन) क्वान्तोंग विदेशी भाषा विवि,चीन

आशुतोष देशमुख
फिल्म अध्यापन एवं प्रबंध, रवीन्द्रनाथ टैगोर संस्थान, मॉरीशस विश्वविद्यालय

डॉ. सोनाली नरगुंदे
विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

डॉ. आरफा राजपूत
एसोसिएट प्रोफेसर, सिनेमा संकाय जी फिल्म स्कूल, नोएडा,यूपी

पुष्पेन्द्रपाल सिंह
सम्पादक, रोजगार निर्माण, मध्यप्रदेश माध्यम, भोपाल

आकल्पन : अपूर्वा,
रेखाचित्र : वंदना पवार मोबा.9403385733

दत्ता कोल्हारे
सहयोगी समन्वयक (अवैतनिक)

http://samagamresearchjournal.com/
peer-reviewed (refereed) journal

ISSN 2231-0479

समागम

अंतर्राष्ट्रीय मानक की शोध एवं संदर्भ की मासिक पत्रिका

वर्ष-22
अंक-08
सितम्बर-2022

भीतर के पन्नों पर

हस्तक्षेप 5-6
- पत्रकारिता की एक खास सुगंध

प्रसंग: राहुल बारपुते 7-17
- हिन्दी पत्रकारिता के बाबा यानी राहुल बारपुते
- मेरे लिए बाबा पत्रकारिता के ब्रह्मांड थे
- अपने आप में अनोखी शख्सियत थे 'बाबा'
- बाबा के साथ काम करने का बिरल अनुभव
- 'बाबा पाठशाला' से निकलने का रोमांच

शोध विमर्श 18-45
- कथाकार रेणु और ग्रामीण संवेदना
- भगवत रावत की कविता और भू-मंडलीकरण के दौर का यथार्थ
- गुरुनानक : प्रेम और मानवता के अग्रदूत
- सुषम बेदी के उपन्यासों में नारी संघर्ष का चित्रण
- जैनेन्द्र की कहानियों में राष्ट्रीय चेतना का स्वरूप
- प्रेमचंद के कथा-साहित्य में किसान
- ग्रामीण पत्रकारिता का बदलता नजरिया
- मनुष्य के अहंकार को खंडित करता उपन्यास : 'यमदीप'
- बहु-भाषी भारत की राजभाषा
- Horrors of Decaying Earth : A Critical Reading of Environmen tal Consci-ousnes in Dilip Chitre's Poetry

पुस्तक चर्चा 46
- अपने समय का दस्तावेजीकरण करती किताब

सदस्यता : वार्षिक सदस्यता (व्यक्तिगत) : 6 सौ रुपये मात्र ▸ वार्षिक सदस्यता (संस्थागत) : 1 हजार रुपये मात्र

सम्पर्क : 3,जूनियर एमआयजी, द्वितीय तल, अंकुर कॉलोनी, शिवाजीनगर,भोपाल-(मप्र)462016 E-mail:samagam2016@gmail.com

3 स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक कृति अग्रवाल द्वारा 3, जू. एमआईजी, द्वितीय तल, अंकुर कॉलोनी, शिवाजीनगर, भोपाल से प्रकाशित एवं तारा ऑफसेट प्रिंटर्स, शॉप नं.-4, जोन वन एमपी नगर भोपाल से मुद्रित. *सम्पादक- मनोज कुमार* अवैतनिक मानसेवी . प्रकाशित सामग्री के लिए सहमति अनिवार्य नहीं. विषय विशेषज्ञ अवैतनिक एवं समस्त वैधानिक जवाबदेही से मुक्त

शोध विमर्श

भगवत रावत की कविता और भू-मंडलीकरण के दौर का यथार्थ

डॉ. संजय रणखांबे
सहयोगी प्राध्यापक तथा विभागाध्यक्ष
डॉ. अण्णासाहेब जी. डी. बेंडाळे महिला महाविद्यालय, जलगांव

शोध सार : भगवत रावत द्वारा लिखित 'सच पूछो तो' और 'ऐसी कैसी नींद' इन दो काव्य-संग्रहों पर यह शोधालेख आधारित है। उनकी भूमंडलीकरण की षड्यंत्रकारी नीतियों, हथकंडों और उसके शिकार बनते सामान्य मनुष्य पर लिखी गयी कविताओं का विवेचन इस शोधपत्र में किया गया है। भूमंडलीकरण के परिणाम स्वरूप देश की जो सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों में बदलाव पर लिखी कविताओं का चयन कर यह शोधपत्र लिखा गया है।

शब्द संकेत : भू-मंडलीकरण, वैश्वीकरण, बाजारीकरण, नैतिकता, विज्ञापन, संवेदनहीनता, क्रय-विक्रय, आदि।

प्रस्तावना : भगवत रावत समकालीन हिन्दी कविता के प्रमुख कवियों में स्थान रखते हैं। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से अपने समय और समाज के यथार्थ को बखूबी अंकित किया है। समाज की विभिन्न समस्याओं, विसंगतियों और विकृतियों का यथार्थ चित्रण इनकी कविताओं में मौजूद है। समाज में बढ़ती अपराध एवं हिंसा की प्रवृत्ति, मनुष्य की खोखली मनुष्यता और संवेदनहीनता, साम्प्रदायिकता की मानसिकता, आतंक के साये में जीवनयापन के लिए विवश आम आदमी, उसकी अभावग्रस्त तथा मेहनतकश जिंदगी, आदि अपने समय की विभिन्न समस्याओं का अत्यंत प्रामाणिक चित्रण भगवत रावतजी की कविता करती है।

भगवत रावत जी के लगभग आठ कविता-संग्रहों में से 'सच पूछो तो' (1996) और 'ऐसी कैसी नींद' (2004) यह दो कविता-संग्रह भारत में निजीकरण, उदारीकरण और बाजारीकरण अर्थात् भू-मंडलीकरण या वैश्वीकरण की नीति के प्रारंभ (1994) के बाद लिखे गए हैं। अत: इन दोनों संग्रहों की कविताओं में भू-मंडलीकरण की शुरुआत के बाद भारतीय समाज हो रहे प्रारंभिक बदलाव का चित्र मिलता है। भगवत रावतजी की कविता अपने सामाजिक दायित्व का वहन करते हुए बाजारवादी सभ्यता-संस्कृति और मानसिकता का वास्तविक चित्रण करती है। इसी कारण इस शोधालेख के लिए उपर्युक्त दो संग्रहों का चयन किया गया है।

इस भू-मंडलीकरण ने न केवल आर्थिक स्थितियों में परिवर्तन किया है बल्कि समाज, धर्म, राजनीति, संस्कृति सभी अंगों को बुरी तरह से प्रभावित किया है। आर्थिक गतिशीलता के चलते सामाजिक संबंधों को निरर्थक तथा अप्रासंगिक बना दिया है।

भगवत रावतजी की कविता मनुष्यकेंद्रीत कविता है। विष्णु खरे जी उनकी कविता के संदर्भ में लिखते हैं- 'आदमी को लेकर एक निसंकोच अपनापन और करुणा भगवत रावत की कविता के केंद्र में है।'[1] डॉ. संतोषकुमार तिवारी जी लिखते हैं- 'भगवत रावत की कविताएं आदमी को केंद्र में रखकर सही शब्द और भाषा की तलाश करती है।'[2] मनुष्य के जीवन के विभिन्न पहलुओं का मार्मिक चित्रण उनकी कविताओं में मिलता है। भारत में सन 1994 में बाजारवादी नीति का प्रारंभ हुआ। यह केवल आर्थिक नीति न होकर सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक स्थितियों पर भी इसका गहरा असर हुआ है। भगवत रावत जी ने इसी दौर में अपनी कविता के माध्यम से इस नीति के संबंध में आगाह करने का प्रयास किया है।

पूंजीवादी ताकतों द्वारा बाजारवादी नीति का संचालन अधिकाधिक मुनाफा कमाने के लिए किया गया है। इसके लिए बाजारवाद में उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए तरह-तरह का चमक-दमक से भरा हुआ माहौल तैयार किया है। ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए लुभावने उपहार दिए जा रहे हैं। जो चीज मनुष्य के लिए जरूरी नहीं वह चीज खरीदने के लिए उसे उकसाया जा रहा है। इसके लिए

विज्ञापन कला ने बाजारवाद का बखूबी साथ दिया है। इसलिए आज जब हम कोई चीज खरीद रहे हैं और साथ में अगर हमें उपहार दिया जा रहा है तो समझ ले कि हम बाजारवाद द्वारा ठगे जा रहे हैं। इसी सच्चाई को उद्घाटित करते हुए कवि ने लिखा है -बाजार में खरीदी हुई चीजों के साथ / जब दिए जाने लगे/ खूबसूरत आकर्षक उपहार / तो रुककर सोचना चाहिए कि अब आपको/ किस विधि से ठगा जा रहा है।'[3]

बाजारवाद के मार्ग की सबसे बड़ी बाधा है मनुष्य का विचारशील, विवेकशील होना। अपनी विशेष दृष्टि को लेकर चलना। मनुष्य का विचार ही उसे सही-गलत, उपयोगी-निरुपयोगी, जरूरी-गैरजरूरी का अहसास कराता है। इसीकारण बाजारवाद ने सबसे पहला प्रहार मनुष्य के विचारों पर ही किया। भू-मंडलीकरण की नीति ने इतिहास, दर्शन, कविता, विचार आदि के अंत की घोषणा की। कवि भगवत रावतजी ने इस भू-मंडलीकरण की नीति का पर्दाफाश करते हुए लिखा हैं -'इस सदी के अंतिम दिनों के अराजक शोर में/पहले ही डूब चुकी दृष्टियाँ / बाढ़ में कबके बह चुके विचार।'[4]

उदारीकरण की नीति ने सारी दुनिया को बाजार में परिवर्तित किया है। इस कारण हर कोई बाजार में कुछ न कुछ बेचता हुआ दिखाई दे रहा है। सभी बेचने वाले ही नजर आ रहे हैं। कहीं कोई खरीददार नहीं। कवि भगवत रावत के शब्दों में- 'अब जबकि उदारता के ताश के/ सारे पत्ते खुल चुके हैं/एक दिन बाजार में बेचने ही बेचने वाले बचेंगे/कहीं कोई खरीदने वाला नहीं होगा।'[5]

विज्ञापन बाजारवाद का सबसे प्रभावी हथियार है जो चीज किसी मनुष्य के लिए जरूरी नहीं, उसे वह चीज कैसी जरूरी है? यह उसके मन पर स्थापित करने का कार्य विज्ञापन कर रहे हैं। मनुष्य को, उसकी क्रय शक्ति को उकसाने के लिए विज्ञापन का उपयोग किया जा रहा है। इसके लिए मनुष्य की भावनाओं को जागृत करने का प्रयास विज्ञापन कर रहे हैं। आम मनुष्य की मानसिकता को पूरी तरह से भांपकर विज्ञापन बनाए जा रहे हैं और पूंजीवादी ताकतें अपना उत्पाद बेच रहे हैं। कवि भगवत रावतजी ने विज्ञापन की असलियत को दर्शाते हुए लिखा है- 'विज्ञापित खेतों में किसान की बेटी की/रंगबिरंगी चुनरी उड़ी जा रही है बादलों के साथ /और वह खुशी में झूमकर /किसी नई खाद के गुण गा रही है /और धान और गेहूं के पौधे /ऐसी मस्ती में लहलहा रहे हैं /कि भूखे पेटों पर तरस खा रहे हैं।'[6]

इस भूमंडलीकरण ने संपूर्ण संसार को बदल दिया है। परम्परागत विचार, भाषा, मान्यताओं को तोड़ते हुए सबकुछ बाजारकेंद्रीत बना दिया गया है। मजदूर, किसान तथा सभी मेहनतकश जिस सोवियत संघ की ओर आशावादी दृष्टि से देखते थे, उसके टूटते ही विश्व में भू-मंडलीकरण की लहर तेज हो गई। 'गरीब' शब्द को अप्रासंगिक ठहराया गया। मनुष्य की पहचान को मिटाने का प्रयास किया जाने लगा है। क्रांतिद्रष्टा विचारक ही अब ईश्वर, इतिहास, विचार के अंत या मृत्यु की घोषणाएं कर रहा है। अब तक जो साहित्यकार क्रांति तथा समाज परिवर्तन के उद्देश्य से साहित्य-सृजन करता था वह भी अब बाजार की चमक-दमक से मोहित होकर मनोरंजन तथा लोगों को रिझाने के लिए साहित्य लेखन कर रहा है। कवि भगवत रावत इस सामाजिक तथा साहित्यिक बदलाव को रेखांकित करते हुए लिखते हैं- 'कल तक जो था क्रांतिद्रष्टा विचारक/अचानक हर चीज के अंत की/घोषणाएं करने लगा है/कोई हड़बड़ी में बदल रहा है अपनी भाषा/कोई आचार कोई व्यवहार/कोई बढ़ाई गई दाढ़ी के बालों के सलीके में/बदल रहा है चेहरे का आकार प्रकार'[7]

बाजार ने मनुष्य को मनुष्य के रूप में रहने नहीं दिया है। वह एक तो विक्रेता बना है या फिर खरीददार। हर व्यक्ति अब केवल मुनाफे के बारे में सोच रहा है। किसी भी शहर में अब कहीं खाली जगह दिखती है तो वहां दुकान खुल रही है। कवि भगवत रावत जी ने 'जो भी खुली जगह देती है दिखाई' कविता में लिखा है-'जो भी खुली जगह दिखाई देती है कहीं/कुछ दिनों बाद निकली वहां से तो पता चलता है/ उस जगह भी खुल गई है कोई/दुकान/कैसा लगता है जब बहुत दिनों बाद मिलने की/ गहरी इच्छा लिए आप किसी दोस्त के/घर जायें और घर की जगह पायें/दुकान।'[8] इस तरह वे लिखते हैं कि इस बाजारवाद के दौर में सब कुछ बिक रहा है। मनुष्य की हाथ मिलाती हथेलियों के बीच की खाली जगह से लेकर पृथ्वी के इर्द-गिर्द के अंतरिक्ष तक बिक रहे हैं। कवि ने बाजारवाद के प्रारंभ से पूर्व समाज में बदल रहे माहौल को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

इस भू-मंडलीकरण ने न केवल आर्थिक स्थितियों में परिवर्तन किया है बल्कि समाज, धर्म, राजनीति, संस्कृति सभी अंगों को बुरी तरह से प्रभावित किया है। आर्थिक गतिशीलता के चलते सामाजिक संबंधों को निरर्थक तथा अप्रासंगिक बना दिया है। मित्र या दोस्त जो एक नि:स्वार्थ संबंध होता है, उसे ही बाजारवाद ने खत्म किया है। इसी कारण कवि भगवत रावतजी ने अपनी 'बच्चों के लिए एक कथा' कविता के माध्यम से कहना चाहा है कि अब इस दौर में हम पहले की तरह किसी भी दोस्त के घर बेरोकटोक नहीं जा सकते। अब संबंधों में व्यवहार, हानि-लाभ देखा जा रहा है। किसी के घर बेमकसद, बेसमय जाना समय की बर्बादी या असभ्य माना जाने लगा है। इसके कारण सामाजिक संबंधों में जो आत्मीयता, अपनापन, जुडाव था वह खत्म हुआ है। इसीकारण भगवत लिखते हैं -'वे बेरोकटोक एक दूसरे के घरों में आते-जाते/ धीरे-धीरे वे एक-दूसरे के सपनों में भी/आने-जाने लग जाते थे/ उनके घरों के दरवाजे कभी बंद नहीं होते थे।'[9] कवि कहना चाहते हैं कि ऐसा वातावरण अब देखने के लिए नहीं मिलता। बाजार में ऐसे नि:स्वार्थ सामाजिक संबंधों को व्यवहार में बदल दिया।

मनुष्य में बढ़ती संवेदनहीनता की प्रवृत्ति भी बाजारवाद की ही देन है। एक दूसरे की सहायता करना, दुख से दुखी होना यह संवेदनशीलता अब दिखाई नहीं देती। पड़ोस की बड़ी से बड़ी दुर्घटना भी आज मनुष्य को विचलित नहीं कर पा रही है। मनुष्य की संवेदनहीनता को रेखांकित करते हुए भगवत रावत जी ने लिखा है -'आंखें जब सब कुछ देखते हुए भी नहीं देखती/कान के पर्दे जब किसी आवाज पर नहीं कांपते/हाथ-पैर जब किसी भी घटना पर नहीं हिलते-डुलते/असर नहीं करती जब नथुनों पर चारों ओर फैली सड़ांध/दिल जब धड़कते-धड़कते किसी बात पर नहीं धड़कता/क्या इसी तरह नहीं होती आदमी की मौत।'[10] अर्थात् आज मनुष्य अपनी आंखों के सामने अन्याय-अत्याचार होते हुए देखता है सुनता है परंतु कोई प्रतिक्रिया नहीं देता है। उसके कानों पर जूं तक नहीं रेंगती। अत: कवि कहते हैं कि यह आदमी की

(शेष पृष्ठ 45 पर)

ISSN 2231-0479
peer-reviewed (refereed) journal

भगवत रावत की... (पृष्ठ 21 का शेष)

मौत है, जिसकी घोषणा होनी बाकी है।

भू-मंडलीकरण ने देश की धार्मिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक स्थितियों को काफी प्रभावित किया है। धर्म के नाम पर आतंकवाद का व्यापार चल रहा है तो राजनीति स्वार्थी लोगों तक सीमित रह गई है और संस्कृति पर नवपूंजीपतियों ने अपना कब्जा कर लिया है-'मानो न मानो/ सच तो यही है कि धर्म सारे के सारे/बन चुके हैं आतंक के हथियार/ राजनीति स्वार्थियों की निजी सम्पत्ति हो चुकी/ संस्कृतियाँ नवधनाढ्यों उनके घर/बर्तन माँज रही है।'[11]

बाजारीकरण के बाद देश में हिंसा, अपराध की प्रवृत्तियों की भी मात्रा अधिक बड़ी है। समाज की मानसिकता में भी काफी बदलाव देखने के लिए मिलता है। हिंसा, अपराध बलात्कार की खबरें भी लोग रस ले लेकर पढ़ने लगे हैं। समाज की बदली हुई मानसिकता का चित्र अंकित करते हुए कवि भगवत रावतजी ने लिखा है-भले ही इसे पागलपन कहा जाए/खोलते ही अखबार मैं सोचने लगता हूँ / किसी कोने में शायद छपी हो यह सूचना/ कि कल से अखबारों में / नए जन्मों की खबरें होंगी नए सिरे से /और पता नहीं कब मैं फिर/ उन्हीं हत्याओं और बलात्कारों की खबरों में/रस लेने लग जाता हूँ।'[12]

समाज में नैतिकता का भी पतन हो गया है। टेलीविजन पर सभी उम्र के परिवारजनों ने मिलकर कामोत्तेजक दृश्य देखना आज नैतिकता के पतन को दर्शा रहा है। कवि भगवत रावत अपनी 'पेड़ों की आवाज' कविता में लिखते हैं- 'अपने-अपने सुरक्षित घरों में पर्दों पर/ संभ्रांत परिवारजन एक दूसरे की नजरें बचाते/संकोची लालसा से देख रहे हैं कामोत्तेजक दृश्य / और सभाओं में नैतिकता के पतन पर/शोक मना रहे हैं।'[13] इस संबंध प्रेमसिंह का मत दृष्टव्य है-'वैश्वीकरण केवल व्यापार का नहीं, देह-व्यापार का भी हो रहा है।'[14]

निष्कर्षत: कवि भगवत रावत जी की 'ऐसी कैसी नींद' और 'सच पूछो तो' इस संग्रह की कविताएं भू-मंडलीकरण के दौर में समाज में हो रहे परिवर्तनों को वास्तविक चित्रण करती है। भू-मंडलीकरण या बाजारीकरण ने किस तरह मनुष्य की क्रय-विक्रय शक्ति को प्रभावित किया, इसका मार्मिक चित्रण भगवत रावत की कविता में अंकित है। देश सामाजिक संबंधों की टूटन के लिए के लिए बदली हुई आर्थिक नीति जिम्मेदार है। परम्परागत आत्मीयता भरे संबंधों की जगह व्यवहार ने ले ली है। राजनीतिक, सांस्कृतिक स्थितियों को भी बाजारीकरण की नीति ने प्रभावित किया है, इसका चित्रण कवि भगवत रावत की कविता में मौजूद है। भगवत रावत की कविता में पर्यावरण, समाज में बढ़तीअपराध, हिंसा की वारदातें आदि सामाजिक विकृतियों का भी यथार्थ चित्रण हुआ है। बाजारीकरण की नीति ने नैतिकता के परम्परागत मानदंडों को किस तरह से तहस-नहस किया, इसका चित्रण भी कवि की कविता करती है।

संदर्भ :

1. रावत, भगवत, सच पूछो तो, नयी दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 1996, फ्लैप
2. तिवारी, डॉ. संतोषकुमार, अज्ञेय से अरुण कमल, भाग-2, नयी दिल्ली, भारतीय ग्रंथ निकेतन, 2005, पृ.100
3. रावत, भगवत, ऐसी कैसी नींद, नयी दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2004, पृ. 34
4. वही, पृ. 93
5. वही, पृ. 95
6. रावत, भगवत, सच पूछो तो, नयी दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 1996, पृ. 19
7. वही, पृ. 44,
8. वही, पृ. 61
9. रावत, भगवत, ऐसी कैसी नींद, नयी दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2004, पृ.16
10. रावत, भगवत, सच पूछो तो, नयी दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 1996, पृ. 95
11. रावत, भगवत, ऐसी कैसी नींद, नयी दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2004, पृ. 94-95
12. रावत, भगवत, सच पूछो तो, नयी दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 1996, पृ. 18
13. वही, पृ. 19
14. सिंह प्रेम, उदारीकरण की तानाशाही, नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2008, पृ. 18

ISSN 2231-0479
peer-reviewed (refereed) journal